पुस्तक समीक्षा

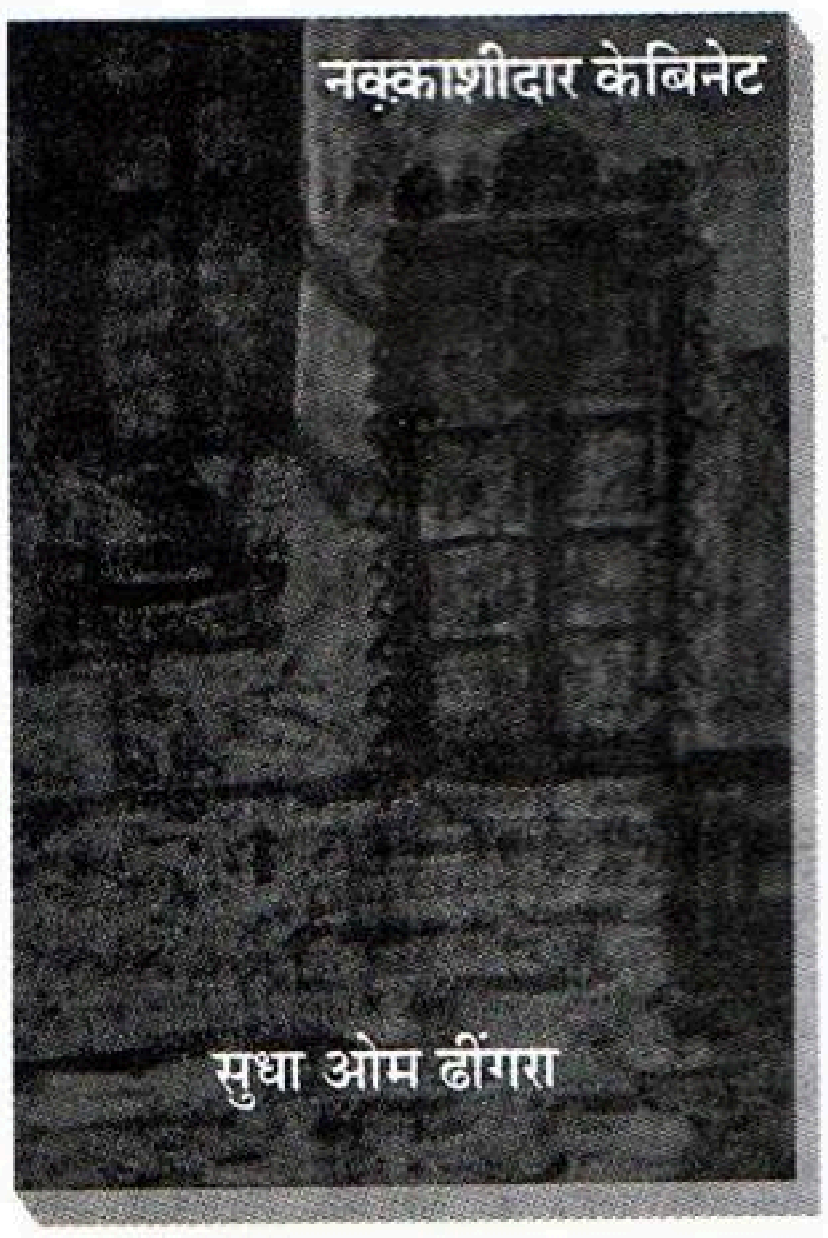

सुधा ओम ढींगरा
★
पुस्तक परिचय

नक़्क़ाशीदार केबिनेट
(उपन्यास)
ISBN: 978-93-81520-28-4
प्रथम संस्करण : 2016
मूल्य : 150.00 रुपये
प्रकाशक
शिवना प्रकाशन
पी.सी. लैब, सम्राट कॉम्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड, सीहोर - 466001 (म.प्र.)
फोन : 07562-405545, 695918
Email: shivna.prakashan@gmail.com
आवरण चित्र
श्री रोहित रूसिया, छिंदवाड़ा
आवरण डिज़ाइन : सनी गोस्वामी
कम्पोज़िंग-लेआउट : शहरयार अमजद ख़ान
मुद्रक
शाइन ऑफ़सेट, भोपाल (म.प्र.)

नक्काशीदार केबिनेट नाम पढ़कर आँखों के आगे घूम जाती है, लकड़ी की एक खूबसूरत अलमारी जिसमें रखा सामान निश्चित ही उसकी नक्काशी की तरह खूबसूरत और मूल्यवान होगा ! लेखिका कहती हैं किसी भी चीज का मूल्य दौलत से ही नहीं आँका जाता, प्यार और स्नेह के बंधन उससे भी ज्यादा कीमती होते हैं ! भौतिक सुख -सुविधाएँ ही सब कुछ नहीं होतीं ए कुछ सुख दोस्तों से जुड़कर भी मिलते हैं! सच बात है सुधा जी, आपका शब्द विन्यास भी बहुत मोहक है रात ने अभी आँखें भी नहीं खोली थी! शाम ही काली कम्बली ओढ़कर उस में सिमटती जा रही थी ! इस ही तरह भावनाओं और संवेगों का कोई पासवर्ड और नंबर नहीं होता, उसे कैसे पहुँचाएँ ?

पुस्तक पढ़ना प्रारंभ करते ही एक ऐसा खौफनाक मंजर सामने आता है कि पाठक उसमें बंध सा जाता है, हरीकेन और टॉरनेडो के आने के खतरनाक संकेत और फिर तूफ़ान से तबाही का वर्णन दिल दहला देने वाला है! हवा में उड़ते घरेलू सामान, बच्चों के खेल-खिलौने यहाँ तक कि पेड़-पौधे भी और फिर उसके गुजर जाने के बाद उससे होने वाली बर्बादी का विस्तृत चित्रण ऐसा रचा है सुधा जी ने कि लगता है हमारी आँखों के सामने से गुजर रहा है तूफ़ान! हर घटना सामने घटित होती दिखती है, पढ़ने वाला दिल थाम के पढ़ता चला जाता है ! जो लोग अमेरिका के बारे में कम जानते हैं उन्हें यहाँ की जानकारी इस समय भरपूर मिलती है इस पुस्तक में ! यहाँ की कानून व्यवस्थाए यहाँ रहने वाले लोगों का हर कठिन स्थिति से निपटने का इंतजाम, किसी को दोष न दे कर स्वयं हर कार्य करने के अनुभव सब बहुत महत्वपूर्ण हैं ! आपने अमेरिका में रहकर भारत का चित्रण और भारत के पाठकों के लिए अमेरिका के रहन-सहन का वर्णन बहुत सुन्दर किया है !

कई जानकारी मिलने के साथ एक और बात समझ में आती है कि चाहे भारत हो या अमेरिका, चोर-उचक्के हर जगह हैं, जो इंसान के बुरे वक्त में, ऐसी दुर्घटनाओं के समय घात लगा कर आक्रमण करने में हर जगह जल्दी पहुँचते हैं और लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ते ! इस ही तरह मददगार भी हर जगह हैं ! राम और रावण की तरह यानि संपूर्ण विश्व में यही हाल है बुराई भी मौजूद अच्छाई भी !

उस तूफानी रात में जब जिंदगी दांव पर लगी हुई थी पंजाब की एक लड़की की डायरी जो उस खूबसूरत कैबिनेट में रखी हुई थी, जीवन का पर्याय बन गई है, वह डायरी एक दीपक की तरह उजाला फैलाती है ! पाठक के सामने पंजाब की तस्वीर उभर कर आती है, परत दर परत पंजाब की अनेक समस्याएँ सामने आती जाती हैं ! कहानी के ताने-बाने नशे में लिपटे पंजाब, आतंकवादियों से उलझते पंजाब से लेकर एक गहन गंभीर समस्या की तरफले जाते हैं जहाँ मासूम लड़कियों को शादी के झूठे जाल में फँसा कर अमेरिका ले जाया जा रहा है ! एक लड़की के साहस की गाथा है यह जो उस कैबिनेट की तरह मजबूत है और खूबसूरत भी लेकिन वह लकड़ी नहीं है जीती-जागती लड़की है और वह विद्रोह करती है, अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ती है ! कई मुश्किलों का सामना

करती हुई अंतत: सफल होती है !

अधिकतर लोगों के मन में यह जिज्ञासा रहती है कि अमेरिका कैसा है? लोग सोचते हैं वहां के लोग तो बहुत शानदार जीवन जीते हैं, वहां तो कोई डर है ही नहीं ! वहां बहुत पैसा कमाया जा सकता है, वहां की पुलिस बहुत स्ट्रांग है, वहां अपराध बहुत कम हैं, वहां गंदगी बिल्कुल नहीं है, गंदगी फैलाने वाले पर जुर्माना लगा दिया जाता है आदि आदि ! यह तो यहीं आने के बाद पता चलता है कि यहाँ के लोग कितने मेहनती हैं, सुबह से शाम तक मेहनत करते हैं ! घर के सारे कार्य खाना बनाने से लेकर बर्तन धोने तक सब स्वयं को ही करना पड़ता है ! घर की सफाई भी आपको ही करनी है, बगीचे का काम भी आपको ही करना है और सबसे बड़ी बात कि ये सारे कार्य करते समय सब लोग एक सुख अनुभव करते हैं, उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं आती इन कामों को करके ! सुबह घर संभालना, फिर ऑफिस जाना और शाम को वापस आकर फिर घर के काम करके, थक के चैन की नींद सो जाना ! पुस्तक की मुख्य पात्र सम्पदा कहती है यहाँ अमीर-ग़रीब सब एक सा जीवन जीते हैं ! मूलभूत सुविधाएँ सबके पास हैं ! सभी अपने घर के धोबी, बाबर्ची, ड्राइवर, माली सफाई वाला/सफाई वाली हैं, मालिक -नौकर कोई नहीं! इस पुस्तक को पढ़कर शायद कुछ लोगों के मन की कुछ जिज्ञासाएँ भी शांत होगीं !

इस ही तरह एम्प्टी नेस्टर्ज के बारे में भी कई बातें बड़ी खूबसूरती से बताई हैं आपने ! परदेश में अपने खून के रिश्ते नहीं होते लेकिन खून से बढ़कर दोस्ती के रिश्ते होते हैं और ये रिश्ते नि:स्वार्थ होते हैं अत: ज्यादा कीमती होते हैं ! परदेश में रहकर सच्चे दोस्तों का अनुभव बहुत होता है ! और दोस्त तो कोई भी बन सकता है जैसे कि सम्पदा के भी दो दोस्त थे एक कुत्ता और एक बिल्ली, तीनों सुनसान पड़े माहौल में अपनी-अपनी खिड़कियों से सिर बाहर निकाल कर, अपनी-अपनी बोली में बात किया करते थे ! यहाँ भाषा कोई बंधन नहीं थी सिर्फ किसी के पास होने का एहसास ही बहुत होता था ! यही बात डाकिये के साथ की गई बातचीत में छलकती है, आधा वह समझे - आधा यह समझी पर एक-दूसरे के दिल से दिल तक बात तो पहुँची ! कोई हमारा सहभागी है यह एहसास तो हुआ !

कहानी की नायिका चूँकि पंजाब से है इसलिए पंजाबी लहजे और पंजाबी शब्दों का बखूबी प्रयोग हुआ है जो कहीं भी कहानी की लय को बाधित नहीं करता अपितु कई शब्द बड़े प्यारे भी लगते हैं ! एक बात और कहना चाहूँगी कि सुधा जी आप एक जासूसी उपन्यास भी जरुर लिखिए इस पुस्तक को पढ़ते समय कई जगह मेरी साँसें थोड़ा रुक गई या कई जगह तेज-तेज चलने लगी और मुझे महसूस हुआ मानों मैं एक सस्पेंस वाला जासूसी उपन्यास भी पढ़ रही हूँ !

सुधा जी आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, शुभकामनाएँ एवं बधाई इस नक्काशीदार कैबिनेट के लिए तथा ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि आप सदैव स्वस्थ रहें और यह लेखनी सतत चलती रहे ! अंत में यही कहूँगी सुधा जी वदिया जी वदिया !

समीक्षा - अनीता सक्सेना
प्रांताध्यक्ष, हिंदी लेखिका संघ
म.प्र. भोपाल

पता: बी-143, न्यू मीनाल रेसीडेंसी,
जे. के. रोड, भोपाल - 462023
संपर्क : 9424402456 , 07752689899
ईमेल: anuom2@gmail.com

जब कलाम ने इफ्तार पार्टी रद्द कर अनाथ बच्चों को दी मदद

पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा। उन्होंने अपना जीवन इस तरह जिया कि वे दुनिया के लिए मिसाल बन गए। उनकी विलक्षण सोच का ऐसा ही उदाहरण ये किस्सा है, जो बताता है कि उनके ह्दय में कितनी विशालता, पवित्रता और मानव जीवन के प्रति आदर भावना थी।

किस्सा उस समय का है जब वे भारत के राष्ट्रपति थे। तब राष्ट्रपति भवन में लगभग हर साल ईद के दौरान इफ्तार पार्टी का आयोजन होता था। इस पार्टी का पूरा खर्च राष्ट्रपति भवन उठाता, जो कि जाहिर है जनता द्वारा टैक्स में दिया गया पैसा होता था। डॉ. कलाम के राष्ट्रपति काल में भी उनका स्टाफ इफ्तार पार्टी की तैयारी में जुट गया। डॉ. कलाम के मुस्लिम होने के कारण अधिकारियों ने इस पार्टी को और बड़ा बनाने की योजना बनाई। जब डॉ. कलाम को यह बात पता चली तो उन्होंने अपने स्टाफ को तुरंत बुलाकर इस तरह की पार्टी में होने वाले खर्च के बारे में जानकारी ली। जब अधिकारियों ने उन्हें बताया कि इसमें लाखों रुपए खर्च होते हैं तो उन्होंने तुरंत पार्टी की योजना को रद्द करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने दिल्ली के अनाथालयों में पल रहे बच्चों की जानकारी बुलवाई और इफ्तार पार्टी रद्द होने से बची राशि से इन बच्चों के लिए खाद्य सामग्री, कपड़े, किताबें व पढ़ाई संबंधी अन्य सामान खरीदवाया।